~~47~~

Sh.
86

पो० सं० 4196-(५५)

२२७
वेद।

विष्णु, कर्ण, पितृ सूक्त

वेद-(गुरुमुखी लिपि)

20-पृ०

पो॰ सं॰ ५१९८
विष्णु... पितृस्तव

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] :
[illegible] :
[illegible] :
[illegible] :

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] ॥ इति हृ
[illegible] ॥ ओं [illegible] ॥ ओं
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

वि॰
कृ॰ [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इति विष्णुकालमन्त्राणि ॥ शुभं ॥

प॰
वि॰सू॰
७

अथ पञ्च विष्णुसूक्तानि ॥ ओं परो विष्णुर्वसिष्ठस्त्रि
ष्टुप्छन्दः ॥ ॥ ओं परो मात्रया तन्वा वृधान न ते महि
त्वमन्वश्नुवन्ति । उभे ते विद्म रजसी पृथिव्या विष्णो देव त्वं पर
मस्य वित्से १ न ते विष्णो जायमानो न जातो देव महिम्नः परम
न्तमाप । उदस्तभ्ना नाकमृष्वं बृहन्तं दाधर्थ प्राचीं ककुभं पृथि
व्याः २ इरावती धेनुमती हि भूतं सूयवसिनी मनुषे दशस्या ।
व्यस्तभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः ३ उरुं
यज्ञाय चक्रथुरु लोकं जनयन्ता सूर्यमुषासमग्निम् । दा
सस्य चिद्वृषशिप्रस्य माया जघ्नथुर्नरा पृतनाज्येषु ४
इन्द्राविष्णू दृंहिताः शम्बरस्य नव पुरो नवतिं च श्नथिष्टम् ।

मन्त्रवर्णितः अन्नमुष्टिमात्रं [illegible] भूत्वा [illegible] ।
[illegible] मनीषा [illegible] श्रीवि [illegible] आत्मानं वचयन्ती ग
[illegible] विशेषविष्णु [illegible] १ वध
[illegible] विष्णु [illegible] विष्णु [illegible]
[illegible] ॥
[illegible] अविष्णुत्वे विष्णुव [illegible] ॥ ध्य
[illegible] मनमाय [illegible] विवामज ॥ १
[illegible] विष्णु [illegible] ॥ म
[illegible] ततः पुनः [illegible] ॥ १ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ओं [illegible]
[illegible] विष्णुवक्त्रं [illegible] विष्णुवक्त्रं, [illegible]
[illegible] विष्णुवक्त्रं, [illegible] विष्णुवक्त्रं, [illegible]
[illegible] विष्णुवक्त्रं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सिंह्यसि, सपत्नसाही स्वाहा, सिंह्यसि रायस्पोषवनिः स्वाहा,
सिंह्यस्यादित्यवनिः स्वाहा, सिंह्यसि ब्रह्मवनिः स्वाहा,
सिंह्यस्यावह देवान् देवयते यजमानाय स्वाहा, भूतेभ्यस्त्वा
विश्वायुरसि, पृथिवीं दृंह ध्रुवक्षिदस्यन्तरिक्षं दृंह
अच्युतक्षिदसि दिवं दृंह, अग्नेर्भस्मास्यग्नेः पुरीषमसि स्वा-
हा ॥ [illegible] पुरीषमसि, [illegible] पुरीषमसि,
[illegible] देवान् देवयते यजमानाय ॥ युञ्जते मन उत यु-
ञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः । वि होत्रा दधे व-
युनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥ देवश्रु-
तौ देवेष्वाघोषेथाम् ॥ इदं विष्णुर्वि० ० इरावती धेनु

भत्रीक्षिकुतं श्रयव भिन्नी भद्र श्रेयस्मभ्रू, ष्टश्च फ्रा ? भी वि
ष्णुर्णे तस्य पञ्चप्र षिवी, अङ्गि ते मयूरास्यः वैष्णव भाभि, विष्णु
भुजा उ ॥ भिवैव विष्णु उउवा या षिंद्रा अनेवा विष्णु
उ ग्रातृते भिन्ना ॥ नमो ? भुवःफट्कच मंत्रे ? यस्मभ्र
? मन्त्रो ॥ विष्णुस्तुकवीदालि ॥ विष्णुर्य भुम
भि, विष्णो गायत्री भभि विष्णुस्तु पृथ्वी, विष्णुस्तु भाभि, विष्णुस्तुवेभि,
वैष्णव भभि विष्णु वेदा ॥ पञ्च विष्णुभ्र ॥ भैव ब्रह्म भवि
उ वीर भवविश्विनेरा ? पञ्चोत्पन्न ? भास्म, उस मलं
स्तमेगीता श्वपिरूत्ता भीस भक्ते ये नमः मां ने मां भाने
रक्षीय उडि उस्रग्रीवा श्वपिरूत्ता भिव पञ्च भिर पञ्च

८।
विश्र।
३

रक्षोहणो वलगहनो प्रोक्षामि वैष्णवीं रक्षोहणो वलग
हनो ऽवनयामि वैष्णवीं रक्षोहणो वलगहनो ऽवस्तृ
णामि वैष्णवीं रक्षोहणौ वलगहना उपदधामि वैष्णवं रक्षो
हणौ वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवं रक्षोहणौ वलगहनौ परि
स्तृणामि वैष्णवान्॥ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पं॰
विभ्र॰
७

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] ॥

[illegible] तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

[illegible] तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

[illegible] तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

[illegible] तस्मै श्रीगुरु॰ ॥

[illegible] तस्मै श्रीगुरु॰ ॥

[illegible] तस्मै श्रीगुरु॰ ॥

[illegible] तस्मै श्रीगुरु॰ ॥

[illegible] तस्मै श्रीगुरु॰ ॥

[illegible] तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

इति गुरुस्तवः समाप्तम् ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ततश्चित्तमावेशं तमावेशं समिति ज्ञसि ॥ योगेन्द्रं तं स्तुवा
यं हृत्स्थमसत्तमस्तुवे ब्रह्मरन्ध्रमाश्रीम ॥ सहस्रम
तद्वृत्तमस्तु कण्ठे सकामस्तु कण्ठसका सिव ॥ ॥ येन
मध्येनामान्नवस्त्रिवसङ्क्रान्तेमान्नममा ॥ डेसाद्भुपाङ्गी ॥
ढियोनेम्स्कृतं ढवं नरविघ्नजा ॥

येनकसङ्ग

क. मि स्त
२९

यद्दुर्लभमत

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible] 𑆎𑆩𑇀 𑆤𑆩𑆂 𑆯𑆴𑆮𑆩𑆁𑆓𑆬𑆩𑇀 ॥

[illegible]

[illegible] 𑆎𑆩𑇀 𑆤𑆩𑆂 𑆯𑆴𑆮𑆩𑆁 [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] । [illegible]

ति पञ्चत्रिंशतीय तेभ्यो नमः शिवभक्ते· ॥ येन कर्म लिं
ङ्गमात्रिंशतीय विभूतिर्मा मनसा कर्मणा वा यद्भावि
तमनसंयन्त्रिभूर्लिङ्गे तेभ्यो नमः शि· ॥ येऽनन्तम
त्तं हिमसेवा येन त्रिशिरा कृपामात्रि येषां कृष्णाधी
मन्त्रित तेभ्यो नमः शिव· ॥ येन क्षेमशूलपाणि शिवीस
त्रिकेशपञ्चपञ्चमैः शिशोर्मसूक्ष्म येनैमकृष्णाकृष्ण पृथक्
नं तेभ्यो नमः शिव· ॥ येनेदं मर्त्यलोके रक्ष्यते सेव
कृपिमत्तेभ्यस्तेभ्यः तेसेवा त्रिपुरे शिवकं तेभ्यो
नमः शिवभक्तेभ्यः ॥ ९

शि·
कृभु·
३१

𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆳𑆪𑆩𑆳𑆑𑆩𑆬𑆳। 𑆨𑆓𑆮𑆠𑇀𑆪𑆻𑆩𑆲𑆳𑆬𑆑𑇀𑆰𑇀𑆩𑇀𑆪𑆻𑆤𑆩𑆲
𑆩𑆳𑆪𑆳𑆑𑇀𑆫𑆴𑆠𑆂 ॥ 𑆮𑆳𑆠𑆱𑇀𑆪𑆳𑆧𑇀𑆪𑆮𑆪𑆾𑆩𑆳𑆪𑆳𑆓𑆼𑆯𑆼𑆮 𑆠𑆼𑆨𑆴𑆂
𑆃𑆾𑆩𑇀𑆨𑆨𑆷𑆮𑆑𑇀𑆰𑇀𑆪𑆱𑆷𑆮𑆡𑆳𑆥𑆳𑆫𑆂 ॥ 𑆯𑆩𑆫
𑆩𑆳𑆓𑆳𑆫𑆮𑆳𑆤𑇀𑆠𑆨𑆳𑆓𑆳𑆤𑇀𑆠𑆩𑆳𑆬𑆼𑆩𑆳𑆫𑆤𑇀𑆠। 𑆑𑆩𑆬𑆑𑆠𑇀𑆱𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮
𑆩𑆳𑆪𑆳𑆯𑇀𑆫𑆻𑆱𑆩𑆴𑆢𑆴𑆩𑆂 ॥ 𑆮𑆳𑆱𑆩𑇀𑆬𑆳𑆮𑆳𑆥𑆳𑆑𑇀𑆱𑆴𑆤𑆴𑆬𑆷𑆩
𑆑𑆼𑆤𑇀𑆠𑆩𑆁 𑆑𑆩𑆬𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆳𑆪𑆼𑆤𑆪𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠𑇀𑆥𑆴𑆫𑆩𑆤 ॥
𑆃𑆠𑆩𑆼𑆮𑆯𑆮𑆳𑆑𑇀𑆱𑆴𑆠𑆩𑆼𑆮𑆳𑆃𑆠𑇀𑆪𑆥𑆳𑆥𑆤𑆂 𑆃𑆠𑆁𑆓𑆳𑆩𑆤𑇀𑆠𑆥𑆤𑇀𑆩𑆼𑆮
𑆩𑆼𑆮𑆳𑆤𑆴𑆮𑆪𑆥𑆳𑆥𑆤𑆂 ॥ 𑆱𑆮𑆴𑆩𑆾𑆮𑆳𑆠𑇀𑆠𑆮𑆳𑆠𑆱𑆨𑆴𑆩𑆼𑆫
𑆥𑆳𑆫𑆮𑆠𑆂 𑆱𑆩𑆠𑇀𑆠𑆱𑆤𑇀𑆠𑆩𑆮𑆳𑆃𑆥𑆳𑆫𑆠𑇀𑆫𑆳𑆃𑆪𑆑𑆥𑆂 ॥ 𑆱𑆮𑆳

उत्तरे स्थितं धर्मं, शिवाद्यं वा स्थितमूर्ध्वः । ऊर्ध्वे विश्वस्थितं धर्मे

शिवाद्यमूर्ध्वं च तथा ॥ स्कन्दादिभिः सदाशिवस्तुतैः, एकैकशश्चतुर्भिः

सहितैश्च स्थितं, पायसान्नं भवाभिदं ॥ इत्यत्राभिहितं

वाह्यपञ्चकं भवतीत्यर्थः । इत्यत्र विश्वाकृतिनियमशाप्यम

श्यत्यात्मभवं ॥ स्वयं यत्र तत्स्थितं धर्मं पञ्चभिः सदाशिवः

स्वयः भवमूर्ध्वस्थितं धर्मे मुख्यमुत्तमं च स्थितं भवाभि ॥ तथाहि

सप्तसप्ततिः, चतुर्भिः सायुज्यनिगदीः सर्वाभिषिक्त

हंसः, पञ्चात्मभयज्ञसाभभि ॥ ॥ शीकार्ये भवति तु

॥ इति ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆪𑆠𑇀𑆠𑆼 𑆨𑆩𑆨𑇀𑆫𑆷𑆨𑆑𑇀𑆰𑆮𑆁 𑆨𑆮𑆼𑆠𑇀𑆠𑆳 𑇆 𑆪𑆠𑇀𑆠𑆼 𑆨𑆓𑆵𑆫𑆴𑆥𑆷𑆮𑆠𑇀𑆠𑆼 𑆨𑆮𑆼𑆠𑇀𑆠𑆳 𑇆
𑆪𑆠𑇀𑆠𑆼 𑆮𑆥𑆼𑆱𑆪𑆼𑆣𑆳𑆵𑆂 𑆨𑆮𑆼𑆠𑇀 𑇆 𑆪𑆠𑇀𑆠𑆼 𑆥𑆢𑆁𑆪𑆠𑆴𑆣𑆩𑆁 𑆨𑆮𑆼𑆠𑇀 𑇆
𑆪𑆠𑇀𑆠𑆼 𑆥𑆮𑆠𑇀𑆱𑆶𑆤𑆠𑇀𑆠𑆼 𑆨𑆮𑆼𑆠𑇀 𑇆 𑆪𑆠𑇀𑆠𑆼 𑆮𑆴𑆱𑇀𑆮𑆨𑆴𑆁𑆱𑆠𑆳𑆓𑆩𑆼𑆠𑇀 𑇆
𑆪𑆠𑇀𑆠𑆼 𑆥𑆫𑆥𑆵𑆫𑆮𑆠𑇀𑆠𑆼 𑆨𑆮𑆼𑆠𑇀 𑇆 𑆪𑆠𑇀𑆠𑆼 𑆑𑆶𑆠𑇀𑆱𑆴𑆠𑆁 𑆨𑆮𑆼𑆠𑆳𑆓𑆨𑆑𑇀𑆰𑆩𑇅 𑇆𑇆
𑆱𑆴𑆮𑆳𑆣𑆩𑆳𑆠𑆴 𑆥𑆫𑆴 𑆑𑆴𑆠𑆱𑆼𑆮𑆱𑆼𑆮𑆳𑆤𑆁 𑆥𑆁𑆠𑇅 𑆱𑆼𑆮𑆑𑆳𑆫𑆁𑆠𑆮𑆠𑇅
𑆪𑆼𑆱𑇀𑆠𑆑𑆼𑆣𑆷 𑆠𑆳𑆓𑆠𑆥𑆵 𑆠𑆴𑆮𑆱𑇀𑆠𑆵𑆑𑆶𑆠𑆑𑇀𑆫𑆩𑆵𑇅 𑆪𑆩𑆨𑆶𑆑𑇀𑆠𑆩𑆷𑆮𑆼𑆓𑆳𑆪
𑆪𑆼𑆓𑆁𑆤𑆥𑆫𑆼𑆠𑇀𑆫𑆂 𑆪𑆼𑆤𑆥𑆼𑆤𑆠𑆼𑆥𑆠𑇀𑆫 𑆤𑆴𑆪𑆤𑆠𑇀𑆫𑆼𑆂 𑆥𑆸𑆡𑆴𑆮𑆵𑆩𑆠𑇀 𑇆
𑆪𑇅 𑆑𑆩𑇀 𑇑𑇐 𑆑𑆴𑆫𑆠𑇀 𑆑𑆼𑆱𑆳𑆠𑇀𑆫𑆶𑆠𑆳 𑆑𑆴𑆫𑆶𑆩𑆑𑆤𑆪𑆱𑇀𑆫𑆠𑆤𑆳𑇅 𑆱𑆱𑇀𑆠𑆤𑆤
𑆱𑇀𑆠𑆼𑆱𑆤𑆪𑆨𑆼𑆫𑆁𑆥𑆴𑆠𑆴𑆣𑆶𑆠𑆴 𑇆 𑇆 𑆤𑆪𑆠𑆼𑆨𑆴𑆪𑆱𑇀𑆠𑆶𑆝𑆁𑆱𑆩𑆴
𑆫𑇅 𑆥𑆠𑆼𑆤𑆠𑆼𑆨𑆢𑇀𑆱𑆵 𑆱𑆡𑆤𑆼𑆥𑆴 𑆝𑆱𑆨𑆨𑆳𑆑𑆁 𑆑𑆶𑆬𑆼𑆜𑆼𑆓𑆳𑆪𑆑𑆶𑆪𑆳𑆠𑇅

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

प·
का-प्र·
३१

सतअभिज्ञ्यमूर्त्तपञ्चमङ्गातेनमूर्तगतज्ञसतअभिज्ञ्
येश्रेपादेयागतह्रीङ्गंमूर्तिमूर्तज्ञाति सतअभिज्ञ्
येश्रेपादेयागत क्रिज्ञनूर्तिगतज्ञाति सतअभिज्ञ्यमू
पञ्चमति ॥ ॥ तमूर्तदमतेचाम मूर्तिलगतज्ञथपेश्रम
भिज्ञ्यमूपञ्चमङ्गातेनमूर्तगतज्ञङ्गपश्रमभिज्ञ्यमूप
देयागतक्रिज्ञनामः मूर्तिगतज्ञतिपश्रमभिज्ञ्येमूप
देयागतक्रिज्ञनूर्तिगतज्ञतिपश्रमभिज्ञ्यमूपञ्चमति ॥ ॥
तमूर्तानमूर्तक्रिमश्रमूर्ललङ्कूरलगतज्ञथधश्रभिज्ञ्
यमूपञ्चमङ्गातेनमूर्तगतज्ञङ्गधश्रभिज्ञ्येश्रेपादे
यागतक्रिज्ञनमूर्लङ्कूतिगतज्ञतिधश्रभिज्ञ्येश्रेपादेत

[illegible] भवति, [illegible]
[illegible] अभिमुख्य [illegible]
[illegible] अभिमुख्ये [illegible]
[illegible] अभिमुख्ये [illegible]
[illegible] भवति ॥ ॥ कर्म [illegible]
[illegible] ति, कर्मे [illegible]
[illegible] कर्मे [illegible]
य· कर्मे [illegible] ति, कर्मे [illegible] ति, कर्मे [illegible] पचति, [illegible]
का·प्र· [illegible]
१३ [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥ ॥ [illegible] ॥ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible] ॥ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

93

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स्तेयाभिवसंस्तुतु येऽन्ने विविध्यन्ति पाउ परेतपितरः सोम्याः
गम्भीरेभिः पथिभिः पूर्वेभिः दत्त्वायास्मभ्यं द्रविणेह भद्रं
रयिं च नः सर्ववीरं नियच्छत अमीमदन्त पितरः ॥ ॥ अत्र
विधुल्लनयक्रचराल्लि सत्यिल्लिककचरायगा :
अमुत्र ... पितरो ... यथाभागमावृषायिषत ॥ नमो
... पितरः ... नमो वः पि
... नमो वः पितरो रसाय नमो वः पि
तरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो
वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो नमो वः पितरः
... वः पितरः ... पितरः ... भागधेयं ...

47

[illegible]